

# सम्पदा न्यूज और डॉ. परमानन्द उपाध्याय



लेखक – अंजनी कुमार उपाध्याय



# सम्पदा न्यूज और डॉ. परमानन्द उपाध्याय



सम्पदा न्यूज और डॉ. परमानन्द उपाध्याय



**Title: SAMPADA NEWS AUR DR. PARMANAND UPADHYAY**  
**Author's name: ANJANI KUMAR UPADHYAY**

**Published by : MOTILAL WELFARE SEWA TRUST**

**Publisher's Address-**  
**MOTI BA NIWAS,**  
**NANDANA WARD WEST**  
**BARHAJ, DEORIA,**  
**U.P. 274601**

**Printer's Details-**  
**Faiz & Jaish Publishing Team**  
**Nandana Pashchimi**  
**Barhaj Deoria**  
**U.P. 274601**

**Edition Details - I st Edition**  
**ISBN: 978-81-978583-4-5**

ISBN: 978-81-978583-4-5



Copyright © Motilal Welfare Sewa Trust



# समर्पण



**डॉ. परमानन्द उपाध्याय**

आपकी बहुमूल्य रचनाओं में से हमें कुछ रचनाएं प्राप्त हुई है । आपकी ये रचनाएँ आपके चरणों में समर्पित ।

**- शंजनी कुमार उपाध्याय**





## अनुक्रमणिका

क्रम	कविता / लेख	पृष्ठ संख्या
01	भूमिका	07
02	आभार	11
03	देव तुम्हारी माया !	13
04	पल में क्या से क्या हो जाता !	15
05	कृष्ण-निमन्त्रण	16
06	नववर्ष	18
07	26 जनवरी 1951 को स्वतन्त्रता दिवस के उपलक्ष्य में	19
08	माँ भारती से	20
09	15 अगस्त 1999 के दिन	21
10	अगस्त 1998 की बाढ़ तथा भीषण बरबादी	23
11	जनता और नेता	24
12	भारतीय ग्राम	25
13	आज का भारतीय ग्राम	27
14	इन फूलों का अपमान न होने देना ।	28
15	नया वक्त आया नये गीत गावो	29
16	विखर गई मंजुल छवि भू पर	30
17	स्वामी विवेकानन्द की जयन्ती पर	31
18	नेताजी सुभाष	33
19	जीवन गान	34
20	मेरी करुणा भरी कहानी	35
21	शब्द	36
22	कविता का जन्म	37
23	गूँज उठे सारी दुनियाँ में जय भारती	39
24	तुम इतिहास को झुठला नहीं सकते	40
25	अखण्ड भारत	41
26	बदलता युग : बदलता साहित्य	43
27	<b>Science Today And Tomorrow</b>	49



## लेखक परिचय

नाम — अंजनी कुमार उपाध्याय

जन्म — 16 जनवरी 1963

जन्म स्थान — बरहज, देवरिया, उत्तर प्रदेश

पिता का नाम — श्री मोती बीए

माता का नाम — श्रीमती लक्ष्मी देवी उपाध्याय ।

प्रारंभिक शिक्षा— श्रीकृष्ण इंटरमीडिएट कालेज आश्रम, बरहज, देवरिया ।

स्नातक — बुद्ध पोस्ट ग्रेजुएट कालेज कुशीनगर ।

पोस्ट ग्रेजुएट — हिंदी में फिरोज गांधी कालेज, रायबरेली,

मनोविज्ञान में परास्नातक, बुद्ध पोस्ट ग्रेजुएट कालेज कुशीनगर ।



- 1982 से लेकर के उन्नीस सौ अठ्ठासी तक राजकीय निर्माण कार्य में सहायक ।
- 1989 में संपदा का संपादन, नागार्जुन, डा क्षेमचंद सुमन, डाक्टर शंभू नाथ सिंह, त्रिलोचन शास्त्री, सत्येंद्र मिश्र, रामदरश मिश्र एवं पिता श्री मोती बीए के साथ प्रबन्ध संपादक का कार्य ।
- साथ ही साथ ज्योतिषाचार्य का भी कार्य ।
- अवैतनिक शिक्षक के रूप में शिक्षण कार्य, अग्रसेन इंटर कालेज लखनऊ, मदन मोहन मालवीय इंटरमीडिएट कालेज, गोरखपुर, सरोजनी कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, बरहज, श्री कृष्ण इंटरमीडिएट कालेज आश्रम, बरहज, देवरिया में अध्यापन, विश्वनाथ त्रिपाठी शिक्षण संस्थान बरहज, सेंट जेवियर्स कालेज बरहज, प्रधानाचार्य में अध्यापन, बाबा बैद्यनाथ उच्चतर माध्यमिक विद्यालय जिगनी सोंहौली, देवरिया में 2009—2010 में प्रधानाचार्य, वर्तमान में एचपीजीडी चिल्ड्रेन अकादमी बरहज में अध्यापन कार्य ।
- श्री मोती बीए के साथ फिल्मों में निर्माण कार्य — ठकुराइन, चंपा चमेली और गजब भईले रामा में फिल्म निर्माता के पी शुक्ला, राकेश पांडे, सुजीत कुमार, पद्मा खन्ना, रवीन्द्र जैन के साथ कला और संस्कृति पर कार्य । श्री मोती बीए की फिल्म मातृमंदिर, 'प्रेम के बँसुरिया' और 'प्रेम प्रेम है' के निर्माण कार्य के लिये कार्य ।
- श्री मोती बीए वेलफेयर सोसाइटी द्वारा पुस्तक के प्रकाशन में सहयोग और उपाध्यक्ष के पद पर कार्यरत ।
- श्री मोतीलाल वेलफेयर सेवा ट्रस्ट के ट्रस्टी ।
- जवाहर प्रकाशन बरहज देवरिया के स्थापना में बहुमूल्य योगदान तथा उसके पदाधिकारी ।
- श्री मोती बीए पुस्तकालय के अध्यक्ष ।



- श्री मोती बीए द्वारा स्थापित संपदा न्यूज के संचालक एवम संपादक प्रमुख । संपदा न्यूज चैनल के एडिटर इन चीफ । रेडियो मोती के प्रमुख डायरेक्टर ।
- पत्रकारिता में, "जुल्म से जंग, हम वतन, न्यूज एक्सप्रेस चैनल में प्रमुख रूप से रिपोर्टिंग, महाखबर, स्वतंत्र चेतना एवं अन्य दैनिक समाचार पत्र" में भी सक्रिय पत्रकारिता ।
- स्वतंत्र रूप से लेखन कार्य । कविता, कहानी, आलोचना, समालोचना, निबंध, संस्मरण,
- ऐतिहासिकता और धार्मिक स्थलों के खोज पर विस्तृत रिपोर्ट ।
- संपदा न्यूज के वेबसाइट के ओनर । श्री मोती बीए के समस्त फिल्मों और गीतों के संकलन कर्ता ।
- संपदा के वेबसाइट पर श्री मोती बीए की पुस्तकों के प्रकाशनकर्ता ।

### प्रमुख रचनाएं—

1. समाचार पत्रों की नजरो में मोती बीए (भाग-01)
2. आत्मकथा—मोती बीए (भाग-01)
3. आत्मकथा—मोती बीए (भाग-02)
4. सरयू से सागर तक (भाग-01) मोती बीए के फिल्मी गीतों और फिल्मों का संकलन, वो गीत जो फिल्मों में आए और उनके नाम नहीं लिखे गए, मोती बीए के चोरी गए फिल्मों के गीत ।
5. आपका मोती — मोती बीए को लिखे गए 151 पत्र
6. उड़ती हुई साधना और बैठे हुए सन्यासी
7. सम्पदा न्यूज और जनार्दन पाण्डेय अनुरागी
8. सम्पदा न्यूज और आचार्य महेन्द्र शास्त्री
9. सम्पदा न्यूज और डॉ. परमानन्द उपाध्याय

निवास — श्री मोती बीए निवास, नंदना पश्चिमी, बरहज, देवरिया, उत्तर प्रदेश 274601



## भूमिका

डॉ परमानंद उपाध्याय के संस्मरणों का कविताओं का संकलन क्यों ? यह प्रश्न मेरे मन मस्तिष्क में बराबर उठ रहा था। बरहज की एक पहचान रहे डॉक्टर परमानंद उपाध्याय अगर चिकित्सा क्षेत्र को अपनाया तो उन्होंने यह कार्य एक सेवक और एक पुजारी के रूप में आजीवन किया। कभी किसी मेडिकल एजेंट के कहने पर किसी दवा का प्रयोग मरीजों पर नहीं किया। इनका कहना था कि जब किसी रोग के लिए प्रमाणिक दवा वर्षों से है और वह मरीज पर कारगर है तो फिर नई दवा का प्रयोग मैं मरीजों पर क्यों करूँ ? कष्ट और रोग को झेलता हुआ मरीज प्रयोग की वस्तु नहीं है। इन्होंने चिकित्सा का कार्य वाराणसी से शुरू किया। जिसमें 1952 में बासुपुर गाजीपुर में, फिर देवरिया जिले के सतराव में और फिर स्थाई रूप से बरहज में चिकित्सा का कार्य इन्होंने प्रारम्भ किया और जीवन के अंतिम क्षण में भी यह इस सेवा के कार्य को करते रहे। डॉक्टर परमानंद उपाध्याय का जन्म 19 दिसंबर 1927 को श्री राधाकृष्ण उपाध्याय के तृतीय पुत्र के रूप में ग्राम बरेजी जिला देवरिया में हुआ। इनकी माता का नाम कौशल्या देवी था। इनके दो बड़े भाई थे। सबसे बड़े भाई श्री जगदीश नारायण मालवीय जो एक विद्यालय में प्रिंसिपल थे तथा इनके दूसरे बड़े भाई कवि श्री मोती बीए थे। इनकी दो बहनें थीं। एक बार अल्पकाल में ही दिवंगत हो गई जबकि दूसरी बहन का विवाह बांसी के नरही गांव में धर्मेन्द्र दुबे के यहां हुआ था जो मोतिहारी में मलेरिया ऑफिसर थे। डॉक्टर परमानंद का विवाह मुजफ्फरपुर बिहार में शांति देवी के साथ हुआ था। इनके तीन पुत्र और एक पुत्री हैं। सबसे बड़े पुत्र स्वर्गीय रवींद्र नाथ उपाध्याय थे जो उत्तर प्रदेश सरकार में विभिन्न पदों पर सचिव रहे, दूसरे पुत्र सुधीर कुमार उपाध्याय जो विकास प्राधिकरण अलीगढ़ में अवकाश प्राप्त कर्णिक हैं, तीसरे सुशील कुमार उपाध्याय हैं जो पैतृक विरासत को संभालते हैं। डॉक्टर परमानंद उपाध्याय को एक पुत्री भी है, 'संध्या पांडे', जिनका विवाह राघवेंद्र पांडे से हुआ है जो अवकाश प्राप्त अभियंता है। परिवार पूरी तरह स्थापित है। परिवार को एक सुंदर स्वरूप देने के साथ ही डॉ परमानंद उपाध्याय एक कर्मयोगी थे और अपने कार्य को किसी और से कहना नहीं चाहते थे। वैसे इनके चाहने वालों की श्रृंखला बड़ी लंबी है। गया चौधरी, गजानंद केडिया, परमेश्वरी सिंह, कुबेरनाथ गुप्त, बैजनाथ गुप्त, श्यामसुंदर तिवारी, बाबू मुंशी सिंह, डॉक्टर रहमान, बाबू केशव सिंह गौरा, बाबू चंडिका सिंह, अंतिम समय के मित्रों में भोलानाथ गुप्त, मोहन जैसे लोग उनसे जब तक





वे जीवित रहे, मिलते रहे । इसी प्रकार के मुलाकातों में हिंदी साहित्य परिषद की नींव बरहज में मेन रोड पर एक किराये के मकान में पड़ी बाद में पुराना बरहज में एक भव्य हिंदी साहित्य परिषद का निर्माण हुआ। इसके साथ ही एक समिति बनी जिसमें गौशाला का भी निर्माण हुआ । इन समितियों में डॉक्टर परमानंद उपाध्याय और उनके सहयोगीजन भी थे । इसमें सत्यव्रत जी महाराज सहित गजानंद केडिया इत्यादि सहयोगी लोग रहे। साहित्य परिषद में प्रतिवर्ष सम्मेलन होने का कार्य क्रम शुरू हुआ, जिसमें डॉक्टर साहब का विशेष योगदान रहा करता था। यहां नीरज, हजारी प्रसाद द्विवेदी, श्याम नारायण पांडे, शंभू नाथ सिंह, बेकल उत्साही, विकल सकती, दान बहादुर सिंह सूढ फैंजाबादी, जुगानी भाई सहित स्थानीय कवि श्री मोती बीए, रामेश्वर प्रसाद यादव, रमेश तिवारी अनजान, कुसुम बंधु, इंद्रेश रावत, सीताराम रावत, बाल कृष्ण पांडेय, धरीक्षण मिश्र, गिरिधर करुण, विचित्र जी, समोसा जी जैसे अनेको साहित्यकार आते थे । डॉक्टर परमानंद उपाध्याय से वे भली भांति परिचित थे।

डॉक्टर साहब ने अपने जीवन काल में साहित्यिक गतिविधियों के साथ साथ काव्य रचना भी करते रहे। वह कभी अपनी रचनाओं को संभाल कर नहीं रख पाए। लिखते थे और भूल जाते थे। उनकी हार्दिक इच्छा थी कि उनकी कविताओं का एक संकलन छप जाए और उसका एक संस्करण सबके सामने आ जाए पर उनके पास मरीजों के कारण समय नहीं मिलता था, और उनका स्वाभिमान किसी से सहयोग के लिए गवारा नहीं करता था। स्वयं इतने व्यस्त थे कि सुबह उठते और शाम तक मरीजों की लाइन लगी रहती थी। कितने मरीज देख लेते थे यह कहना मुश्किल है । मरीजों से कभी भी उन्होंने रु. 5 से लेकर के रु 35 से अधिक तक की दवा नहीं दी और मरीज उतने में ही ठीक हो जाया करते थे ।

संपदा न्यूज से उनका बहुत ही आत्मिक रिश्ता रहा है। वैसे तो संपदा न्यूज के संस्थापक श्री मोती बीए ने 1989 में राष्ट्रीय स्तर के कवियों को लेकर एक संरक्षक मंडल के द्वारा इसे प्रारंभ किया। और ये कुछ समय बाद बंद भी हो गया । उसे समय मैं उसका प्रबंध संपादक था, पर समय के साथ नेट की दुनिया में जब संपदा न्यूज स्थापित हुआ तब श्री मोती बीए भी दिवंगत हो चुके थे। डॉक्टर परमानंद उपाध्याय ने उस समय बहुत अधिक सहयोग किया। कदम कदम पर आत्म बल बढ़ते रहे। वह कहते भी रहे कि जब तुम्हारा संपदा न्यूज प्रारंभ हो तो मेरी कविता लगाना, मेरा फोटो



लगाना, भूल मत जाना, वैसे संपदा न्यूज को स्थापित होने में के पूर्व डॉक्टर परमानंद उपाध्याय की तबीयत काफी खराब हो गई। वह इलाज के लिए लखनऊ गए और फिर जीवित नहीं आए। वह शख्स जिसने 70 वर्षों के चिकित्सा सेवा में लाखों मरीजों की सेवा करके जीवन दान दिया, यमराज के द्वार से मरीज को वापस कर लिया, वही शख्स मौत से अपनी लड़ाई हार गया और 8 मार्च 2016 को इस दुनिया से विदा हो गए। संप्रदाय न्यूज उस समय प्रारंभ हो चुका था, लेकिन संपदा न्यूज ने उस दिन अपना एक अभिभावक को खो दिया। कविताएं लगती रही, उनकी पहली कविता संपदा में छपी, “जीवन में मैं कभी ना हारा”।

डॉक्टर साहब के दिवंगत होने पर उनके अभिन्न मित्र भोलानाथ गुप्ता जी मेरे पास आए और एक बड़ी राशि मुझको भेंट करते हुए कहा कि डॉक्टर साहब ने हमसे कहा था कि भोला जी यदि हम ना आ पाए तो संपदा न्यूज को आप मदद कर देना। हम उनकी बात को आज अपनी हैसियत के मुताबिक मदद में दे रहा हूं, हां, हमारी यह शर्त है कि यह बात कभी जाहिर न की जाए। वैसे तो हम इसका जिक्र नहीं करते, पर आज डॉक्टर परमानंद उपाध्याय की पुस्तक को प्रस्तुत करते हुए इसका जिक्र ना करें तो एक बहुत बड़ा अपराध बोध होता। डॉक्टर साहब के जीवन काल में उनकी कविताओं की पुस्तक प्रकाशित नहीं हो सकी।

कुछ समय के बाद हमें ऐसा लगा कि अब जो कुछ है वह एकत्रित करके नेट पत्रिका के रूप में आपके सामने प्रस्तुत करूँ। इसके लिए हमने डॉक्टर परमानंद उपाध्याय के सबसे छोटे पुत्र सुशील कुमार उपाध्याय से संपर्क स्थापित किया, कुछ कविताएं उनके प्रयास से हमें मिली। कुछ श्री मोती बीए के संकलन में मिली। हमें एक साथ एकत्रित करते हुए बड़ा हर्ष हुआ। इतना ही नहीं उनके कुछ लेख हमें आश्रम बरहर से निकलने वाली पत्रिका अनंत ज्योति 1960, 1968 से मिली। “संपदा न्यूज और डॉक्टर परमानंद” इस नाम से एक संकलन प्रकाशित कर रहा हूं। नेट संस्करण होने के कारण अति शीघ्र जनमानस तक पहुंचे यही हमारी हार्दिक इच्छा है। इस पुस्तक के प्रकाशन में हम डॉ. परमानंद उपाध्याय के परिवार के साथ और सहयोगी जनों के सहयोग को, प्रोफेसर अजय कुमार मिश्र भूतपूर्व प्राचार्य बाबा राघव दास भगवान दास स्नातकोत्तर महाविद्यालय आश्रम बरहज और कवि इंद्र कुमार दीक्षित भूतपूर्व मंत्री एवं वर्तमान उपाध्यक्ष नागरिक प्रचारिणी सभा देवरिया के साथ अन्य सभी सहयोगी बन्धुओं और मित्रों का हम आभार प्रकट करते हैं।



## संपदा न्यूज और डॉ. परमानन्द उपाध्याय



हमें उम्मीद है कि “संपदा न्यूज और डॉक्टर परमानंद उपाध्याय” यह पुस्तक सुंदर स्वरूप के रूप में सामने होगी। इसके लिए हम संपदा न्यूज के परिवार के सभी सदस्यों को, हमारे तकनीकी सहायक जैश एन्ड फैज टेक्निकल ग्रुप (फैजान अंसारी, जीशान अंसारी) और संपदा न्यूज के संपादक मंडल के हम आभारी हैं।

– अंजनी कुमार उपाध्याय

**निवास-**

**श्री मोती बीए निवास, नन्दना पश्चिमी, बरहज,  
देवरिया, उत्तर प्रदेश 274601**

[www.sampadanews24.blogspot.com](http://www.sampadanews24.blogspot.com)

[www.facebook.com/anjaniupadhyay](http://www.facebook.com/anjaniupadhyay)

[www.pinterest.com/sampadanews](http://www.pinterest.com/sampadanews)

[www.x.com/anjanikumarupadhyay](http://www.x.com/anjanikumarupadhyay)

[www.linkedin.com/anjaniupadhyay](http://www.linkedin.com/anjaniupadhyay)

[email-editorsampadanews@gmail.com](mailto:email-editorsampadanews@gmail.com)

**Mob. No. 8299015136**





## आभार

आभारी हूँ, उन महान विद्वानों, मनीषियों, रचनाकारों और महाकवियों का जिनकी कालजयी कृतियों से सदा अनिवर्चनीय आनन्द की अनुभूति होती है। वे कृतियों उस अद्भुत स्वप्नलोक में पहुँचाती हैं, जहाँ निरन्तर अमृतवर्षा होती रहती है और अजस आनन्द व सुख की धारा प्रवाहित होती रहती है। उन चमत्कार पूर्ण रचनाओं से मन मयूर नाच नाच उठता है और संसार के सारे दुख और कठिनाईयाँ विस्मृत हो जाती हैं। आज उस तरह की कविताओं का नितान्त अभाव है। कविता में सार्थक भाव, भाषा, लय और प्रवाह दूढ़ना निरर्थक है। कवि सम्मेलनों और कवि-गोष्ठियों में चुटकुला सुना-सुना कर वाह-वाही लूटी जा रही है। आज जिस तरह की रचनायें पढ़ी जा रही हैं, उनके लिये कोई विशेषण नहीं लगाना चाहता। किसी विद्वान ने कहा है कि कविता मर रही है। आज का वातावरण देख कर यह उक्ति उचित ही है।

आज श्रोताओं का भी अभाव है। जीवन की भाग-दौड़ में कविता पढ़ने व सुनने की रुचि और अवकाश किसे है ? कभी-कभी किसी मजबूरीवश ऐसे श्रोताओं के समक्ष उपस्थित होना पड़ता है, जिनके बारे में कहा गया है कि 'अरसिकेषु कवित्व निवेदन शिरसि माँ लिख माँ लिख माँ लिख ।'

फिर आभारी हूँ, अगणित स्नेही हितैषियों, मित्रों और शुभचिन्तकों का जिन्होंने अकारण स्नेह, अपार सम्मान और शुभकामना दिया है। मैं उससे अभिभूत हूँ। उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिये मेरे पास उपयुक्त और समर्थ शब्द नहीं है।

बरहज काव्यधारा के उन स्नेही मित्रों का आभारी हूँ जो मेरी टूटी-फूटी रचनाओं को बड़े ही धैर्य से सुनते और सराहते हैं। साथ ही आवश्यक होने पर बड़े ही प्रेम, सहानुभूति और सद्भाव पूर्वक तन मन से मेरी सहायता करने को सदा उद्यत रहते हैं। संकट के क्षणों में इन लोगों ने जो सहयोग दिया है और कष्ट को बाँट कर हल्का किया है, वह वर्णनातीत है।





## सम्पदा न्यूज और डॉ. परमानन्द उपाध्याय



अन्त में मैं यह निवेदन करना चाहता हूँ कि मेरी यह कृति पूर्णतः स्वान्तः सुखाय है। यदि यह आपको कुछ भी प्रभावित कर सका तो मैं अपना सौभाग्य मानूँगा। क्षमा प्रार्थना सहित,

निवेदक

परमानन्द उपाध्याय





## देव तुम्हारी माया !

देव तुम्हारी माया !

तुम अनादि हो, तुम अनन्त हो ।  
तुम्ही आदि हो, तुम्ही अन्त हो  
करुण हृदय हो, परम सन्त हो  
मानव तो भगवान तुम्हारी,  
इच्छाओं की छाया ।

देव तुम्हारी माया !

तन्त्रों में कुछ तत्व नहीं है,  
जीवन में अपनत्व नहीं है  
सार नहीं, कुछ तत्व नहीं है  
तब इंगित पर उठती—गिरती,  
मिटती मानव काया ।

देव तुम्हारी माया !

चाहो तो तूफान उठा दो,  
बड़े—बड़े हिमवान हिला दो,  
महाप्रलय के गान सुना दो,  
चाहे जग को स्वर्ग बना दो,  
जैसा तुमको भाया ।

देव तुम्हारी माया !

ज्ञान तुम्ही विज्ञान तुम्ही हो,  
रजकण तुम्ही, महान तुम्ही हो,  
रूपहीन, छविमान तुम्ही हो  
अपनी क्रीड़ा में महती,



जगती को नाच नचाया ।

देव तुम्हारी माया !  
तुम ही शुभ कर्मों के दाता,  
कोटि—कोटि के भाग्य—विधाता,  
सुख—दुख दाता, भवभय भाता,  
तब अर्चन में ही ऋषियों के

वेद उपनिषद गाया !

देव तुम्हारी माया !

पराधीन मानव का जीवन,  
शक्तिहीन, मूर्छित सा तन—मन  
बन्धनमय है उसका यौवन,  
तुमने ही पौरुष बन कर,  
कुछ ऊँचा उसे उठाया ।

देव तुम्हारी माया !

आओ आ प्राणों में गावो,  
सुन्दर, सरल मेघ सम छावो,  
पर निज माया—जाल हटाओ,  
जिस पर कृपा दृष्टि तब होगी,  
उसने तुमको शीश झुकाया ।

देव तुम्हारी माया !

(यह रचना 1945 से 1950 के बीच की है)

\*\*\*



## पल में क्या से क्या हो जाता !

पल में क्या से क्या हो जाता !

स्वप्न—लोक सा मधुमय सुन्दर,  
हँसता इठलाता सा मन हर,  
लहराता छहराता निर्झर,  
चट्टानों से जा टकराता,

पल में क्या से क्या हो जाता !

फटे हुए चिथड़ों में लिपटा,  
गिरे हुए दानों से चिपटा,  
बचा हुआ जो मिटता—मिटता,  
पल में ही साम्राज्य घुमाता,

पल में क्या से क्या हो जाता !

विविध रंग की ये क्रीड़ायें,  
नाना सुख, नाना पीड़ायें,  
अद्भुत, अघटित सी घटनायें,  
क्षण में किससे कौन कराता,

पल में क्या से क्या हो जाता !

(सन् 1945 से 1950 के बीच)

\*\*\*





## कृष्ण-निमन्त्रण

गीता का मधुमय गान कहाँ ?

मानवता आज अनाथ पड़ी,  
दानवता है मुहँ खोल खड़ी,  
वसुधा में छाया है क्रन्दन,  
काटा जाता निर्बल का तन,  
ऐसी अशान्ति, ऐसी दुनियाँ,  
मानव को तेरा ध्यान कहाँ?

गीता का मधुमय गान कहाँ ?

छाया मानव—मानव में भय,  
जग—जीवन है पूरा दुखमय,  
चलती है रात्रि दिवस गोली,  
खेली जाती खूनी होली,  
आपस में ही यह सब विभेद,  
है तेरा अनुपम ज्ञान कहाँ ?

गीता का मधुमय गान कहाँ ?

कर्तव्यों की पहचान नहीं,  
अब है जीवन में गान नहीं,  
हम आज शक्ति से रहित हुए,  
हम आज भक्ति से रहित हुए,  
हम दुष्कर्मों के केन्द्र बने,  
जो जीवन को मधुमय कर दे,  
वह तेरी शुभ मुस्कान कहाँ ?

गीता का मधुमय गान कहाँ ?



क्या आज यहाँ उत्पात नहीं ?  
भींगा वसुधा का गान नहीं,  
रोती मानवता आज नहीं,  
दानवता का सुखसाज नहीं,  
अति आतंकित अपना स्वदेश,  
है उसका पहला मान कहाँ ?

गीता का मधुमय गान कहाँ ?

भारत में एक बार आओ,  
गीता के मधुर गान गाओ,  
पथभ्रष्ट, अनैतिक तत्वों को,  
बाँसुरी बजा कर समझाओ ।  
यदि नहीं समझ वे पाते हैं,  
तो पुनः महाभारत होगा,  
अन्यायी गद्दी छोड़ेगा,  
न्यायी का सिंहासन होगा,  
फिर गली-गली में गूँजेगा,  
गीता का मधुमय गान यहाँ ।

गीता का मधुमय गान कहाँ ?  
(सन् 1947 में प्रकाशित )

\*\*\*



## नववर्ष

नवल वर्ष शुभ मंगलमय हो !

जन—जन में नव जागृति आये,  
भ्रान्ति मिटे, पीड़ा मुरझाये,  
गुञ्जित हो तन, मन, धन, वन, बन,  
नवल गीत का स्वर लहराये,  
दीप्ति हँसे जग के प्रांगण में,  
शुभ भावनाओं का चय हो,  
नवल वर्ष शुभ मंगलमय हो !

जड़ता मिटे चेतना जागे,  
मन से गहन तमिस्ना भागे,  
हँसें खिले जीवन की घड़ियाँ  
सुन्दर ही सपना हो आगे,  
लहर लहर जीवन लहराये,  
चिन्ता रहित न शंकामय हो,  
नवल वर्ष शुभ मंगलमय हो !

सौरभमय मलयानिल डोले,  
मधुर—मधुर खग कुछ—कुछ बोले,  
शुभ हॉस छिटके अग जग में,  
कुसुम कली निज अन्तर खोले,  
सत्य, अहिंसा का स्वर गूँजे,  
दूर क्षितिज में बन्द प्रलय हो,  
नवल वर्ष शुभ मंगलमय हो !

(सन् 1953—54 के 'दैनिक आज' के नववर्षांक में वीणाधारिणी सरस्वती के चित्र के साथ प्रकाशित)

\*\*\*



## 26 जनवरी 1951 को स्वतन्त्रता दिवस के उपलक्ष्य में

आज कवि की कल्पना, साकार होती जा रही है

ज्योति की किरणें छिटकतीं, जगमगाती है दिशायेँ  
स्वर्णमय रंजित प्रभामय, अब न ये तम की घटायेँ  
आज प्राची में ऊषा, अद्भुत छटा छिटका रही है  
आज कवि की कल्पना, साकार होती जा रही है।  
नील नभ में हास छिटका, प्रकृति कण—कण को सजाती  
मुक्त सागर गीत गाता, अवनि निज वैभव लुटाती  
कुसुम कुञ्जों में मनोहर माधुरी नव छा रही है  
आज कवि की कल्पना, साकार होती जा रही है।

विविध खग उन्मुक्त उड़ते, पंख में अद्भुत रवानी  
दे रहे हैं सूचना कि आ रही हँसती जवानी  
साथ निज सौन्दर्य, सुख, समृद्धि जीवन ला रही है  
आज कवि की कल्पना, साकार होती जा रही है।  
प्रकृति के स्वर में मिला स्वर, आज जन—मन गुनगुनाता  
भूल कर अभिशाप पिछले, वह नये युग को बुलाता  
शक्ति, दृढ़ता, शूरता, जनचेतना अपना रही है

आज कवि की कल्पना, साकार होती जा रही है।  
आज मानव समझता, अपने दुखों का मूल कारण  
और यह भी जानता कि कर नहीं सकता निवारण  
आज उसके जागरण के गीत कोयल गा रही है  
आज कवि की कल्पना, साकार होती जा रही है।

\*\*\*





## माँ भारती से

माँ तुम्हारी अर्चना के फूल है, स्वीकार कर लो

शक्ति भर हमने संजोये  
भक्ति भर हमने संजोये  
हर्ष से पुलकित नयन के  
अश्रुओं से हैं भिंगोये  
माँ तुम्हारी साधना के फूल हैं, स्वीकार कर लो।

अर्चना कैसे करें हम  
वन्दना कैसे करें हम  
कुछ नहीं है ज्ञात माँ  
आराधना कैसे करे हम  
शून्य है अभिव्यक्ति जग की, भूल है, स्वीकार कर लो  
माँ तुम्हारी साधना के फूल हैं, स्वीकार कर लो।

किस तरह वरदान माँगें  
किस तरह हम ज्ञान माँगें  
कर सके कुछ भी न सेवा  
किस तरह हम मान माँगें  
हम तुम्हारे युग—चरण के धूल हैं स्वीकार कर लो  
माँ तुम्हारी साधना के फूल हैं, स्वीकार कर लो।

\*\*\*



15 अगस्त 1999 के दिन

पन्द्रह अगस्त को धूमधाम से जश्न मनाने वालों  
तुम आठ अगस्त बयालिस भूल न जाना।

उन वीरों की गाथाओं को दुहराओ  
बलिदानों की यह अमर कहानी गाओ  
उनके उत्सर्गों पर यह महल खड़ा है  
उनके अद्भुत पौरुष को भूल न जाओ  
उनके महान बलिदानों को मस्तक सदा झुकाना  
पन्द्रह अगस्त को धूमधाम से जश्न मनाने वालों  
तुम आठ अगस्त बयालिस भूल न जाना।

निःस्वार्थ भाव से वीरों ने अपना रक्त बहाया  
लाठी, डण्डा और गोली खा कर झण्डा फहराया  
भीषणतम अत्याचारों से लड़ कर विजय मिली थी  
जब मास, मूर, हैलट को भारत ने मार भगाया  
घनघोर यातना सह कर वे लाये नया जमाना

पन्द्रह अगस्त को धूमधाम से जश्न मनाने वालों  
तुम आठ अगस्त बयालिस भूल न जाना।

गाँधी की वाणी ने था सागर में ज्वार उठाया  
करना है या मरना है, सुनकर दुश्मन थर्राया  
धरती तक डोल उठी थी, नभ पर बादल छाये थे  
अंग्रेज यहाँ से भागे, आजादी का युग आया  
वह रात अन्धेरी बीती, आया शुभ प्रात सुहाना  
पन्द्रह अगस्त को धूमधाम से जश्न मनाने वालों  
तुम आठ अगस्त बयालिस भूल न जाना।

कुछ ऊँचे आदर्शों के हित यह अभियान हुआ था  
इस मातृभूमि की खातिर यह अभियान हुआ था



## सम्पदा न्यूज और डॉ. परमानन्द उपाध्याय



फाँसी, बन्दीगृह, गोली, लाठी और त्याग तपस्या  
सब कुछ सहकर आजादी का यह वरदान मिला था  
उन ऊँचे आदर्शों को गद्दी हित मत ठुकराना

पन्द्रह अगस्त को धूमधाम से जश्न मनाने वालों  
तुम आठ अगस्त बयालिस भूल न जाना।

\*\*\*



डॉ. परमानन्द उपाध्याय के साथ डॉ. शम्भूनाथ सिंह और उनके बड़े भाई मोती बीए



## अगस्त 1998 की बाढ़ तथा भीषण बरबादी

इस बाढ़ से घबरा नहीं, निर्माण का संकल्प लो।

इस सृष्टि के प्रारम्भ में तुमने बहुत तूफान झेले,  
जल-प्रलय के साथ भीषण आँधियों के गान झेले,  
आज की बरबादियों से आँख में आँसू न लाना,  
खड़े होकर राष्ट्र के उत्थान का संकल्प लो।  
इस बाढ़ से घबरा नहीं, निर्माण का संकल्प लो।

तुम विकास पुरुष सनातन, सृष्टि के श्रृंगार कर्ता,  
वनों, पर्वतों, घाटियों की रम्यता के हो नियन्ता,  
जटिलतम कठिनाइयों से तुम कभी हारे नहीं हो,  
आज की आपत्ति से संग्राम का संकल्प लो  
इस बाढ़ से घबरा नहीं, निर्माण का संकल्प लो।

तुम अजेय, अपूर्व क्षमता के धनी गौरव शिखर को  
हो चन्द्रमा और तारकों में भ्रमण करते वीरवर हो  
प्रलय के नर्तन कभी तुमको नहीं भयभीत करते  
दुख भरे संसार के कल्याण का संकल्प लो  
इस बाढ़ से घबरा नहीं, निर्माण का संकल्प लो।

\*\*\*



डॉ. परमानन्द उपाध्याय की माता  
श्रीमती कौशल्या देवी



डॉ. परमानन्द उपाध्याय के पिता  
श्री राधाकृष्ण उपाध्याय





## जनता और नेता

मेरा नेता बाहुबली है, वोटों का वह नहीं भिखारी ।  
यह न समझना घूम घूम कर माँगेगा वह राय तुम्हारी ।  
धूम—धाम से विजयी होगा, अगणित जन जयकार करेंगे  
घूमेंगे मालायें लेकर, उसके चारो ओर पुजारी  
मेरा नेता बाहुबली है, वोटों का वह नहीं भिखारी ।

उसको तुमसे क्या मतलब है, वह है राजभवन का वासी  
टूटी—फूटी झोपड़ियों में काटो तुम दुख भरी उदासी  
सड़क, सफाई, बिजली, पानी, रोटी, रोजी, सदा माँगते  
उसकी मस्ती, उसके सुख में, विघ्न डालते सत्यानाशी  
मेरा नेता बाहुबली है, वोटों का वह नहीं भिखारी ।

समझ गया है मेरा नेता, शक्ति तुम्हारी चाल तुम्हारी  
अब उसको मन्त्री होना है, आयी है अब उसकी बारी  
पलटेगा वह भाग्य तुम्हारा, अपने घर चूना लगवाना  
नोट कहाँ तुम गिन सकते हो, गिनते रहो सदा रेजगारी  
मेरा नेता बाहुबली है, वोटों का वह नहीं भिखारी ।

पूरी करना माँग असम्भव, तुम्हे सिर्फ आश्वासन दूँ  
गल छीन—झपट धन—वैभव पाया, तुम्हे नोट दूँ मैं क्या लूँगा ?  
आबादी बढ़ती जाती है, तुम हो विकट समस्या युग की  
कैसे तुमको पार लगाऊँ, समय मिला तो फिर सोचूँगाँ  
राजकीय उपभोगों का तो, मैं ही एकमात्र अधिकारी  
मेरा नेता बाहुबली है, वोटों का वह नहीं भिखारी ।

\*\*\*



## भारतीय ग्राम

भारत का यह पीड़ित उर है, करुणा का आगार ।

दलित, गलित, पीड़ित, निर्बल है  
परम अशिक्षित पर निश्छल है  
सुन्दर, परम पुनीत, अचञ्चल  
मन्जुल सरिता सा निर्मल है

नव नवनीत समान मृदुल है, इस दुर्बल का प्यार ।  
भारत का यह पीड़ित उर है, करुणा का आधार ।

दीन दुखी कष्टों का मारा,  
निर्धनता का परम सहारा,  
निशि दिन, अविरल क्रम में पलता,  
कर्म मार्ग से कभी न हारा ।

यद्यपि छिन्न—भिन्न इसकी, जीवन वीणा के तार ।  
भारत का यह पीड़ित उर है, करुणा का आगार ।

भारत का अतीत है इसमें,  
युग की नव प्रतीति है इसमें,  
वेद, उपनिषद, स्मृतियों के लिये,  
पुनीत प्रीति है इनमें ।

कोमल, शान्त, पुनीत, मधुरतम, हैं इनके उद्गार ।  
भारत का यह पीड़ित उर है, करुणा का आधार ।

ऋषि हैं इनमें रहने वाले,  
मौन व्यथा को सहने वाले,  
शत—शत अत्याचार करो पर,  
नहीं कभी कुछ कहने वाले ।



कभी नहीं माँगा इन्होने, निज व्यापक अधिकार।  
भारत का यह पीड़ित उर है, करुणा का आगार।

ये ही भारत भाग्य विधाता  
निज पुनीत संस्कृति के ज्ञाता

प्रगतिशीलता नयी सभ्यता  
युग चेतनता के निर्माता

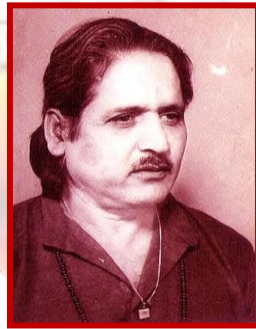
नयी क्रान्ति नूतन स्वराज्य के हैं ये ही अधिकार।  
आधार भारत का यह पीड़ित उर है, करुणा का आगार।

(यह रचना सन् 1947 से 1950 के बीच की है। यह उस समय के गाँवों का चित्र है।)

\*\*\*



सबसे बड़े भाई  
जगदीशनारायण मालवीय



दूसरे बड़े भाई  
मोती बीए



सबसे छोटे  
परमानन्द उपाध्याय



## आज का भारतीय ग्राम

ईर्ष्या, द्वेष, झगड़े में झुलस रहा गाँव,  
अब कहाँ नीम, पीपल, बरगद की छाँव,  
अब कहाँ स्नेह और कहाँ भाईचारा,  
चोरी, बेइमानी, क्षुद्र स्वार्थ का नजारा।

किसी का किसी से अब कोई लगाव नहीं,  
साथ बैठने के लिये अब कहीं अलाव नहीं,  
नाग पंचमी के अखाड़े कहाँ गये ?  
खेल, कूद, गिरह के नजारे कहाँ गये ?

बरगद की छाया में आल्हा जब होता था,  
सारा गाँव साथ-साथ जगता और सोता था,  
होली, दिवाली, विवाह और बारातों में,  
सारा गाँव एक था दिन और रातों में।

गाँवों के सारे संस्कार सुप्त हो गये,  
सभ्यता और शिष्टता तो कभी लुप्त हो गये।  
सूना सूना सा गाँवों का परिवेश है,  
इन्ही गाँवों में बसता भारत देश है।

कहते हैं गाँवों में नयी क्रान्ति आयी है,  
ग्रामोन्नति करते सभापति बधाई है,  
पर विकास का अर्थ ही उलट गया,  
सारा धन एक ही व्यक्ति में सिमट गया।

(रचना काल 19 अगस्त 1999—नागपंचमी)

\*\*\*





## इन फूलों का अपमान न होने देना।

इन फूलों का अपमान न होने देना।

ये ईश्वर की सर्वोत्तम कृतियाँ हैं,  
ये पवित्रतम, सुन्दर विभूतियाँ हैं,  
ये सदा सुगन्ध बाँटती रहती हैं,  
ये देवों की पावन अभिरुचियाँ हैं,

ये पुष्प उचित अधिकारी को ही देना,  
इन फूलों का अपमान न होने देना।

तुम सोच-समझ कर अपना कदम उठाओ,  
धनवैभव की सरिता में डूब न जाओ।  
तुम उसे पुष्प देना जो देव सदृश हो,  
उच्चादर्शों को ही बस शीश झुकाना,  
इन पुष्पों का अवसान न होने देना।  
इन फूलों का अपमान न होने देना।

सितम्बर 1999

\*\*\*



डॉ. परमानन्द उपाध्याय और उनकी धर्म पत्नी श्रीमती शान्ती देवी उपाध्याय



## नया वक्त आया नये गीत गावो

नया वक्त आया, नये गीत गावो ।  
बहुत गा चुके राग अब तक पुराना,  
सुनेगा इसे अब न बिल्कुल जमाना,  
नयी कल्पना को नया राग दो अब,  
पुराना तरन्नुम गले मत लगाओ ।  
नया वक्त आया, नये गीत गावो ।

तुम्हारी कला में नयी क्रान्ति आये,  
क्षितिज पर सुनहरी किरण जगमगाये,  
मिटे भ्रान्ति युग की, बढ़े कान्ति जग की,  
नयी रागिनी में जरा गुनगुनाओ ।  
नया वक्त आया, नये गीत गावो ।

कहाँ खो गयी दिव्य वाणी तुम्हारी,  
कहाँ सो गयी वो सबल काव्यधारा,  
उठाओ कलम, आज ऐसा लिखो कुछ,  
मिले निर्बलों, पीड़ितों को सहारा,  
जमाने को बदलो, अन्धेरा मिटाओ ।  
नया वक्त आया, नये गीत गावो ।

कभी तुमने वेदों का गायन किया था,  
कभी तुमने गीता, रामायण दिया था,  
उठो आज अपने सबल काव्य द्वारा,  
धरा को हिलाओ, गगन को हिलाओ ।  
नया वक्त आया, नये गीत गावो ।

(दिसम्बर 1989)

\*\*\*



## विखर गई मंजुल छवि भू पर

विखर गई मंजुल छवि भू पर।

ऊषा के अधरों की लाली,  
अभिनव पल्लव की हरियाली,  
कुसुम कुञ्ज की ले कोमलता,  
निकली है यह छवि मतवाली,  
धरती यह निधि पाकर गर्वित,  
पुलक पुलक उठता है अम्बर।  
विखर गई मंजुल छवि भू पर।

मधुऋतु की मादकता छायी,  
चञ्चलता, चपला से आयी,  
मलय समीर नितान्त प्रफुल्लित,  
कोयल है गा रही बधाई,  
अगणित कर स्वागत को आतुर,  
शंकित शुभ्र चित्र उर—उर पर।  
विखर गई मंजुल छवि भू पर।

किसके उर की मधुर कल्पना,  
सत्य बनेगा किसका सपना,  
हर्षित, गर्वित, सुधि विस्मृत हो,  
कौन कहेगा यह सब अपना,  
पूछ रही जग की आकुलता,  
अधर रहेंगे किन अधरों पर।  
विखर गई मंजुल छवि भू पर।

सन् 1949, B.H.U.

\*\*\*



## स्वामी विवेकानन्द की जयन्ती पर

निखित विश्व के कोने-कोने, धर्मध्वजा फहराने वाले,  
सन्त विवेकानन्द तुम्हारी, अमर कीर्ति का है अभिनन्दन ।

बड़ी-बड़ी दूकान सजाये,  
धर्मों के व्यापारी आये,  
तरह-तरह के शब्दाडम्बर,  
से निज आकर्षण फैलाए,  
तुमने उनको समझाया कि  
सच्चा धर्म नहीं बिकता है,  
त्याग, तपस्या, करुणा से,  
मानवता का दीपक जलता है।  
दुनियाँ हुई चमत्कृत सुनकर,  
हुआ तुम्हारा शत्-शत् वन्दन।

निखिल विश्व के कोने-कोने, धर्मध्वजा फहराने वाले,  
सन्त विवेकानन्द तुम्हारी, अमर कीर्ति का है अभिनन्दन ।

मूर्छित, दबी हुई भारत की  
आत्मा को तुमने झकझोरा,  
फैका मन्त्र जागरण का,  
आलस्य और तन्द्रा को तोड़ा।  
सागर स्थिर शिलाखण्ड से,  
कर भारत माँ का आवाहन ।

निखित विश्व के कोने-कोने, धर्मध्वजा फहराने वाले,  
सन्त विवेकानन्द तुम्हारी, अमर कीर्ति का है अभिनन्दन ।

ओजस्वी वाणी से तुमने,  
अत्याचारी को ललकारा,  
आडम्बरी और दम्भी कपटी,





को बार—बार फटकारा ।  
तुमने उन्हें उठाया जो थे  
आर्त और करते थे क्रन्दन ।

निखित विश्व के कोने—कोने, धर्मध्वजा फहराने वाले,  
सन्त विवेकानन्द तुम्हारी, अमर कीर्ति का है अभिनन्दन ।

आज अगर तुम होते तो,  
क्या सत्ता के हित दौड़ लगाते ?  
सुख, सुविधा, गद्दी की खातिर,  
सब सिद्धान्तों को ठुकराते ?  
लोकतन्त्र, झूठे विकास का,  
पोते रहते तन पर चन्दन ?

निखित विश्व के कोने—कोने, धर्मध्वजा फहराने वाले,  
सन्त विवेकानन्द तुम्हारी, अमर कीर्ति का है अभिनन्दन ।

12 जनवरी, 2001



\*\*\*



## नेताजी सुभाष

नवयौवन का सन्देश लिये तुम आये।  
संसृति में नव आवेश लिये तुम आये।

तुमने देखा जग में रोती मानवता,  
तुमने देखा शोणित रंजित बर्बरता,  
तुमने मानव को नित ही पिसते देखा,  
तुमने देखा नर्तन करती दानवता,  
पीड़ित उर की आहों से आँधी तूफान उठाये  
नवयौवन का सन्देश लिये तुम आये।  
संसृति में नव आवेश लिये तुम आये।

तुमने देखी माता के हाथों में कड़ियाँ,  
आजादी के दीवानों पर गिरती बेटों की छड़ियाँ।  
फाँसी के तख्तों पर देखा तुमने मानव का जीवन,  
अत्याचारी के स्वागत में तत्पर फूलों की लड़ियाँ।  
नवयौवन का सन्देश लिये तुम आये।  
संसृति में नव आवेश लिये तुम आये।  
तुम देख में एक बहर कर आँखों में

तुमने अपूर्व पौरुष से अवनी आकाश हिलाया,  
परतंत्र देश के जीवन-सागर में ज्वार उठाया,  
हिल उठा विश्व का कण-कण सम्पूर्ण दिशायें कॉपी,  
आजाद हिन्द सेना में जब आगे कदम बढ़ाया।  
उषा की लाली के मिस तुम प्राची में मुसकाए।  
नवयौवन का सन्देश लिये तुम आये।  
संसृति में नव आवेश लिये तुम आये।

30 जून 1947

\*\*\*



## जीवन गान

जीवन क्षण—क्षण बीत रहा है।  
अन्तर में उल्लास नहीं अब,  
अधरों पर मृदु हास नहीं अब,  
मधु का प्याला रीत रहा है।  
जीवन क्षण—क्षण बीत रहा है।

क्या भविष्य की मधुर कल्पना,  
वर्तमान भी रहा न अपना,  
तम से पूर्ण अतीत रहा है।  
जीवन क्षण—क्षण बीत रहा है।

प्राची मे ऊषा मुसकाई,  
पर न मुझे वह छवि कुछ भाई,  
दुखमय जीवन गीत रहा है।  
जीवन क्षण—क्षण बीत रहा है।

नियति करेगी कैसी क्रीड़ा,  
मुसकायेगी क्या अब पीड़ा,  
प्राण सदा भयभीत रहा है।  
जीवन क्षण—क्षण बीत रहा है।

\*\*\*



## मेरी करुणा भरी कहानी

सुन न सकोगे, बरस पड़ोंगे, मेरी करुणा भरी कहानी ।  
पत्थर भी यदि होंगे, तो भी हो जावोंगे पानी—पानी ।  
मुझे न छेड़ो जलने दो तुम, मेरे पास न आओ ।  
जल जाओगे इस ज्वाला में, थोड़ा सा भय खाओ ।

क्षण भंगुर मानव जीवन है, यहाँ तनिक मत भूलो ।  
अपनी इस गौरव गरिमा पर मत फूलो, मत फूलो ।  
अपने कर्तव्यों का तुम को मूल्य चुकाना होगा ।  
जरा—जरा सी भूल चूक के हित पछताना होगा ।

सन् 1953







## शब्द

दूर,  
पत्थरों से टकरा कर,  
मेरी आवाज पुनः वापस लौट आती है।  
ऐसा लगता है कि मैं चारो ओर पहाड़ों से घिरी  
उस निर्जन घाटी से बोल रहा हूँ  
जहाँ से आवाज बाहर नहीं जा पाती।  
ठीक ही तो है,  
इस भीषण जन कोलाहल में,  
कौन सुने मेरे शब्द,  
जिसमें सामर्थ्य नहीं,  
हुंकृति की,  
अत्याचार, अन्याय, असमानता, असत्य के विरुद्ध ।

सन् 1950





## कविता का जन्म

कविता तभी जन्म लेती है,  
जब आँखें आँसू बरसाती,  
सारे जग का दर्द कलम में भर कर,  
कवि की वाणी गाती।

करुणा और दया से भर कर,  
वाल्मीकि जब द्रवित हुए थे,

तब उनके श्रीमुख से निकली,  
अद्भुत, दिव्य अलौकिक वाणी।

देवों ने तब स्तुति की थी,  
सुन विचित्र कविता कल्याणी।  
इसको मनोविनोद न समझो,  
इसकी शक्ति अपार अपरिमित,  
नई क्रान्ति का आवाहन कर,  
नई सृष्टि की रचना करती।

अत्याचारी अन्यायी से,  
लड़ती रहती कभी न डरती।  
याद करो चन्दबरदाई,  
तुलसी और सुकवि भूषण को।  
युग के अन्धड़ से टकराये  
दूर किया सारे दूषण को।

कविता अति ज्वलंत होती है,  
शब्दों का यह खेल नहीं है।  
शुष्क, निरर्थक, भावहीन  
कोरे शब्दों का मेल नहीं है।



## सम्पदा न्यूज और डॉ. परमानन्द उपाध्याय



मानवता को जाग्रत करती,  
मुर्दों में यह प्राण फूंकती,  
करुणा, दया, सरसता भर कर,  
कोयल सी यह कूका करती।

वासन्ती रातों को यह  
उन्माद ग्रस्त करती रहती है,  
रजनीगन्धा, हरसिंगार के  
फूलों सी झरती रहती है।

यह निरुद्देश्य नहीं होती है,  
परिवर्तन का विगुल बजाती।  
कविता तभी जन्म लेती है,  
आँखें जब आँसू बरसाती ।

जून 2000





## गूँज उठे सारी दुनियाँ में जय भारती

ज्ञान और प्रतिभा के दरवाजे खोल दो,  
माता सरस्वती की जय—जय बोल दो।

बन्द करो घातक (गन्दा) आरक्षण का खेल।  
देश को बनाओ मत तमसावृत जेल।  
क्षमता और ऊर्जा की राह मत रोको,  
प्रगति की राह के रोड़ों को टोको।  
लोकतन्त्र को जाति तंत्र में न बाँटो,  
देश की हरीतिमा को इस तरह न चाटो।  
देशभक्ति को मत शब्दकोष से निकालो,  
नैतिकता और चरित्र आग में न डालो।  
सन् बयालिस आ सकता है, यह कभी न भूलो।  
स्वार्थ के झूले पर इस तरह न झूलो।  
झूठे विकास के स्वप्न न दिखाओ,  
गगन में उड़ने वाली सड़क मत बनाओ।  
जनजाति, दलित जाति, पिछड़े और अगड़े,  
स्वार्थ हित मत खड़ा करो ऐसे झगड़े।

तरह—तरह के पुष्प हैं सब एक ही बाग में,  
मत इनको झोंको विभिन्नता की आग में।  
सामाजिक न्याय के नाम पर अन्याय न हो,  
सबको समान अवसर, योग्य का अबमान न हो।  
देश की एकता, अखण्डता बचा लो,  
देश की महान संस्कृति को सम्भालो।

भारत माता की सब आओ करें आरती,  
गूँज उठे सारी दुनियाँ में जय भारती।

27 जून 2000

\*\*\*





## तुम इतिहास को झुठला नहीं सकते

तुम इतिहास को इतिहास को झुठला नहीं सकते।  
अगर ऐतिहासिक नहीं हो तो इतिहास बना नहीं सकते।

कालपात्र गाड़ना और निकालना,  
दोनों ही नादानी है।  
सत्य को फुसलाने की साजिश है,  
बेईमानी है।  
राजनैतिक संकट की घृणित कहानी है।  
इतिहास तो काल के पृष्ठों पर लिखा जाता है।  
पढ़ता है उसको अन्तरिक्ष,  
और टपकाता है आँसू,  
या बरसाता है रजत सदृश,  
मोतियों का हार।

इतिहास के अक्षर तो अमिट हैं,  
शाश्वत हैं, अजर हैं, अमर हैं।  
उससे छेड़खानी बहुत बड़ी भूल है।  
उसे बदलने की कोशिश ऊल-जलूल है,  
क्योंकि इतिहास प्रायः अपने को दुहराता है,  
जो उससे खेल करते हैं उन्हे धूल में मिलाता है।  
इसीलिए कुछ ऐसा करो,  
जिससे इतिहास बने,  
महापुरुषों की पंक्ति में,  
तुम्हारा भी नाम चले,  
वरना गड्ढे खोदो और पटवाओ।

और जनता को बरगला कर सत्ता हथियाओ।

14 जुलाई 1977

\*\*\*



## अखण्ड भारत

है चिर अखण्ड यह महादेश ।  
इसने सुख की घड़ियाँ देखीं,  
मृदु गीतों की लड़ियाँ देखीं,  
दुख—सुख, तूफान, प्रलय देखे,  
करुणा प्लावित झड़ियाँ देखीं ।  
यह अचल रहा, यह अडिग रहा,  
मिट सका नहीं वैभव अशेष ।  
है चिर अखण्ड यह महादेश ।

वेदों की सुषमा का गायक,  
जग का संस्कृति—शिक्षा—दायक,  
अपने अतीत के गौरव से  
अब भी वसुधा का उन्नायक,  
अक्षय, अनन्त निधि का उद्गम  
वन्दन करते जिसका सुरेश ।  
है चिर अखण्ड यह महादेश ।  
विकसित संस्कृति का धवल रूप  
अद्भुत, अक्षय, अतिशय, अनूप,  
सभ्यता और संस्कृति रक्षक  
होते थे जिसके प्रबल भूप ।  
वह राम कृष्ण की पुण्य भूमि,  
यह है अशोक का शुचि स्वदेश ।  
है चिर अखण्ड यह महादेश ।

जगती के भीषण परिवर्तन,  
पीड़ित मानवता के क्रन्दन,  
इसकी आभा को छू न सके,  
ज्योति पावन इसका तन—मन ।  
यह जग का भाग्य विधाता है,  
बदलेगा इसका कौन वेश ।  
है चिर अखण्ड यह महादेश ।



## सम्पदा न्यूज और डॉ. परमानन्द उपाध्याय



युग से हम वीर महान पैक,  
युग युग से हिन्दुस्तान एक,  
यह कभी नहीं हो सकता,  
कट जायें चाहे सिर अनेक ।  
यह भरत भूमि है चिर अखण्ड,  
इतिहास देख, तब प्रबल द्वेष ।  
है चिर अखण्ड यह महादेश ।

\*\*\*





## बदलता युग : बदलता साहित्य

आज हम एक ऐसी दुनिया में रह रहे हैं जैसी दुनिया मानव इतिहास में पहले कभी नहीं रही है। पुरानी साभ्यतायें एवं परम्परायें बड़ी तेजी से बदल रही हैं। आदर्श बदल रहे हैं। विज्ञान की सहायता से विकसित औद्योगिक, प्राविधिक और तकनीकी ज्ञान आज मानव-जीवन का आधार बना हुआ है। चारों ओर कल कारखाने, मशीनें और तरह-तरह के औजार उत्पादन बढ़ाने में लगे हुए हैं। अनियंत्रित, उद्दाम एवं भयंकर जलधाराओं को नियंत्रित कर अभिशाप को वरदान में बदल दिया जाता है, नदियों के प्रवाह को विपरीत दिशा में मोड़कर विद्युत् शक्ति प्राप्त की जा रही है जिससे युग-युग को अन्धकार समाप्त हो रहा है। कल्पना से भी ऊंचे बड़े बाँच बनाकर रेगिस्तान को नखलिस्तान बनाया जा रहा है। कृषि में नये-नये प्रयोग हो रहे हैं। जहाँ एक मन पेदा होता था आज वहाँ चार मन होता है। समय को रफ्तार बढ़ो तेज है और आज मनुष्य को रफ्तार भी 18 से 22 हजार मील प्रति घण्टे की हो गयी है। मनुष्य आज पृथ्वी की सीमाओं को छोड़कर अन्तरिक्ष में मुक्त और निर्विघ्न विचरण कर रहा है। बिना किसी सहारे के यान से कूद कर अन्तरिक्ष में तैर रहा है और पुनः यान में प्रविष्ट हो रहा है। चन्द्रमा को तो छोड़ दीजिये, मंगल और शुक्र ग्रह पर अपना झण्डा गाड़ने को तइयारियाँ हो रही हैं। सूर्य से भी लाखों मील दूर के ग्रहों से सन्देश आ रहे हैं और मानव मन उधर दौड़ पड़ने को आकुल हो रहा है।

दुर्गम स्थलों पर बसें और गाड़ियाँ दौड़ रही है। पहाड़ों को डाइनामाइट से तोड़ कर सड़क बनायी जा रही हैं। समुद्र को छाती पर बड़े-बड़े जलयान मस्त होकर झूम रहे हैं। चिकित्सा के क्षेत्र में मनुष्य अमरत्व को तलाश कर रहा है। हृदय का प्रतिरोपण एक-एक महानतम आश्चर्य है, विशिष्ट उपलब्धि है।

उक्त वर्णन प्रस्तुत करने में मेरा उद्देश्य सम्पूर्ण वैज्ञानिक प्रगति का लेखा प्रस्तुत करना नहीं है केवल मोटे तौर से उस दुनिया का एक चित्र प्रस्तुत किया गया है जिसमें हम आज रहते हैं। युग का प्रभाव जीवन पर पड़ता ही है और आज हमारा जीवन पूरी तरह युग से प्रभावित है।

**नये युग की समस्यायें**—नये युग में सुविधायें बढ़ी हैं, साधन बढ़े हैं पर नयी नयी कठिनाइयाँ एवं उलझने भी बढ़ी है। यन्त्रों के सान्निध्य में रहते-रहते मानव का भी यंत्रीकरण हो गया है। वह यंत्रों की तरह से सोचता समझता



और कार्य करता है। मानवीय संवेदना और हृदय पक्ष का तो उसमें नितान्त अभाव हो गया है। श्रद्धा, विश्वास एवं निष्ठा से वह हीन हो चुका है। प्रचलित राह उससे छूट गयी है और नयी राह मिल नहीं रही है। वह लक्ष्यहीन और पथभ्रष्ट होकर निराश एवं कुंठाग्रस्त हो गया है। हिरोशिमा और नागासाकी में आणविक युद्ध की विभीषिका वह अपनी आँखों से देख चुका है। वह आतंकित है कि वियतनाम या कोरिया या विश्व के किसी कोने में कही पुनरावृत्ति न हो जाय। अणु बमों के परीक्षण से उत्पन्न रेडियो सक्रिय धूलि युद्ध में गिराये गये विविध प्रकार के रोगों के कीटाणु, तथा महानाश के अन्य उपकरण मानव चेतना पर निरन्तर सवार हैं। कलों कारखानों का भयानक शोरोगुल, शहरों की भीड़-भाड़ भयानक जीवन-संघर्ष, कुष्ठा, निराशा, भय, आतंक, आस्थाहीनता, अविश्वास आदि भी इसी वैज्ञानिक युग की उपलब्धि हैं। ऊपर से देखने में तो यह दुनिया बहुत रंगीन है पर इसमें बड़ा भ्रम है। सुप्रसिद्ध उर्दूशायर नूशूर वाहिदी कहते हैं—

नयी दुनिया मुजरस्सम दिलकशी मालूम होती है  
मगर इस हुस्न में दिल की कमी मालूम होती है  
ये लब की तिश्नगी है या नजर को प्यास है साकी  
कि हर बोतल जो खाली है भरी मालूम होती है।

नयी दुनिया भीतर से खोखली है, विद्युत की चकाचौंध है पर भीतर का प्रकाश लुप्त है। जीवन के दृष्टिकोण में क्रान्तिकारी परिवर्तन हो रहे हैं। चारों ओर उथल पुथल की स्थिति है। राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक मर्यादायें भंग हो रही हैं। राष्ट्रसंघ में मेज पर जूते पीटकर भाषण किये जाते हैं। आज कहीं भी अनुशासन नहीं रह गया है। फलतः भीड़भाड़, शोरोगुल व्यस्तता एवं अव्यवस्था से ऊबे हुए लोग हिप्पो और बीटल बन रहे हैं और महेशयोगी की शरण में सकून को तलाश कर रहे हैं। कुछ लोग परम्परा और मान्य नैतिकता से विद्रोह कर रहे हैं तो कुछ लोग तटस्थभाव से मूक दर्शक बने हुए हैं। कुछ लोग यह समझ रहे हैं कि उन्हें इस स्थिति से लेना देना नहीं है और वे अनायास ही इस झंझावात में फँक दिये गये हैं।

**साहित्य पर प्रभाव** —युग को इन परिस्थितियों का प्रभाव आज के काव्य और साहित्य पर बड़े व्यापक ढंग से पड़ा है। याज का कवि एवं साहित्यकार हत-प्रभ किंकर्तव्यविमूढ़, निराश एवं आस्थाहीन हो चुका है उसे भविष्य





प्रकाशमान नहीं दिखाई देता । वह महसूस करता है कि परिस्थिति में कोई मोड़ देने में वह असमर्थ है। नेतृत्व तो दूर वह युग को कोई प्रेरणा भी नहीं दे सकता। वह परम्परा से कटा हुआ है और अपनी विशिष्ट संस्कृति को छोड़ चुका है। समूचा नव-लेखन और चिन्तन आज इन्हीं भावों का प्रकाशन कर रहा है। नग्न शब्दों में या प्रतीकों के माध्यम से यथार्थ का चित्रण, बौद्धिकता से बोझिल दुरुह एवं विशेष शैली में किया जा रहा है। यही नई कविता है। कुछ लोग जबर्दस्ती गेय बनाकर इसे नवगीत की संज्ञा दे रहे हैं। आज हिन्दी साहित्य में ऐसी ही कवितायें लिखी जा रही हैं।

नयी कविता या नव गीतों में विशेषतायें भी हैं। इसमें निहित बौद्धिकता को स्वीकार हरना ही पड़ता है। यथार्थ का चित्रण इनमें अद्वितीय ढंग से हुआ है। कविता को नये उपमान, नयी विधायें, नयी अभिव्यक्ति प्राप्त हुई हैं। छंदों एवं तुकों की सीमा से मुक्त कविता को अभिव्यक्ति के लिये पूर्ण अवसर प्राप्त हुआ है। पुराने ढंग को घिसी-पिटी लोक पर चलने वाली कवितायें आज के बौद्धिक युग की समस्याओं को ठीक से व्यक्त नहीं कर सकतीं। पुरानी उपमायें भी आज सटीक नहीं बैठ रही हैं। जमाना लौटकर पीछे नहीं जा सकता। प्रकृति के रहस्यों का प्रतिक्षण उद्घाटन हो रहा है और नये साहित्य को इस वैज्ञानिक प्रगति के साथ कदम मिलाना आवश्यक ही है। नया कविता से इस लक्ष्य की पूर्ति तो हो रही है परन्तु युग को इससे नवीन प्रेरणा नहीं मिल रही है। हृदयस्थल का स्पर्श नहीं होता और काव्यानन्द की सृष्टि नहीं होती। इन कविताओं में निराशा, आस्थाहीनता, अश्रद्धा, अंधकार पुरातन से विद्रोह, नग्न यथार्थ एवं मानव की दुर्दशा का चित्रण रहता है जो जोरदार होते हुए भी सरसता एवं काव्यगत माधूर्य से दूर है और प्रायः ऐसा प्रतीत होता है कि हम रूखे गद्य का अध्ययन कर रहे हैं।

‘कीलो से जड़ दिया गया हूँ

‘आओ कुछ बात करें घर की’

— डा. शम्भुनाथ सिंह को ये कवितायें ऐसे ही वातावरण की सृष्टि करती हैं।

**साहित्यकार का उत्तरदायित्व**—साहित्यकार समाज के सबसे बौद्धिक वर्ग का प्रतिनिधि होता है। उसे अंधकार एवं निराशा के क्षणों में युग को मार्ग निर्देशन एवं उद्बोधन देना चाहिये पर आज का कवि अपनी वाणी की असमर्थता से अवगत है और अपनो सीमा वह समझ रहा है ! सुनिये एक नये कवि को—



दूर  
पत्थरों से टकरा कर  
मेरी आवाज  
पुनः मेरे पास  
वापस लौट आती है  
ऐसा लगता है कि  
मैं  
चारों ओर पहाड़ों से घिरी  
उस निर्जन घाटी से बोल रहा हूँ  
जहाँ से आवाज बाहर नहीं जाती ।  
ठीक ही तो है,  
इस भीषण जन-कोलाहल में,  
कौन सुने मेरे शब्द  
वे तो यति क्षीण हैं  
उनमें सामर्थ्य नहीं  
हुंकृति की  
अत्याचार, अन्याय, असमानता, असत्य के विरुद्ध ।

कवि की यह व्यथा व्यक्तिगत उसकी ही नहीं आज पूरे समाज की है। आज कौन किसकी सुनता है। मानवता को आज तो क्षीण से क्षीणतर होती जा रही है परन्तु कवि एवं चिंतक का कार्य इन्हीं अन्धकारमय क्षणों में प्रकाश दिखाने का होता है। उसे मनुष्य में आस्था होती है। विश्वास होता है। एक उर्दू कवि के शब्दों में—

जुल्म जिस रंग में चाहे भी बदल सकता है  
लेकिन इन्सान मरा है न कभी मरता है।

कवि की कलम शक्ति-शाली होती है और उसकी आवाज साधना की आवाज होती है वह अनसुनी होकर नहीं रह सकती। कवि कहता है—

मैंने मर मर कर ये इल्म ये फन पाले हैं  
मैंने फौलाद को पिघला के कलम डाले हैं।

अन्धकार जब और गहरा होता है तो कवि की साधना बलिदानी बन जाती है। 'फैज' के शब्दों में—



लौह कलम छिन गई तो गम क्या है  
कि खूने दिल में डुबो ली हैं उंगलियाँ मैंने ।

हिन्दी के कवियों ने भी ऐसे निराश एवं अंधकारमय क्षणों में प्रेरणा एवं उद्घोषण दिया है। आज के कवि की भाँति वह पलायन का मार्ग नहीं अपनाता। दिनकर का एक उद्धरण —

क्रांति धात्री कविते, जाग उठ, आडम्बर में आग लगा दे।  
पतन पाप पाखण्ड जले, जग में ऐसी ज्वाला सुलगा दे।  
विद्युत की इस चकाचौंध में देख दीप को लो रोती है।  
अरी ! हृदय को थाम, महल के लिये झोंपड़ी बलि होती है।  
धन—पिशाच के कृषक—मेध में नाच रही पशुता मतवाली ।  
आगन्तुक पीते जाते हैं, दोनों के शोणित की प्याली ।  
उठ, दीनों की भाव रंगिणी! दलितों के दिल की चिनगारी ।  
युग—मर्दित यौवन की ज्वाला, जाग, जाग री, क्रांति कुमारी ।  
लाखों क्राँच कराह रहे हैं, जाग आदि जग की कल्याणी ।  
फूट फूट तू कवि—कण्ठों से, बन व्यापक निज युग की वाणी ।

निराशा एवं शून्य के क्षणों में कवि की वाणी कितनी प्रखरता से मुखरित होकर दबी हुई आवाज को सबल बनाती है, उपरोक्त उद्धरण इसका एक उदाहरण है।

‘नवीन’ कहते हैं :—

‘कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ जिससे उथल—पुथल मच जाये।

एक हिलोर इधर से आए, एक हिलोर उधर से जाये ॥

समाज के बौद्धिक श्रेणी का प्रतिनिधि समाज से तटस्थ और निर्लिप्त रहकर मूक दर्शक कैसे बना रह सकता है ? संकट के क्षणों में कवि सर्वदा आगे रहे हैं—चाहे चन्द वरदाई हों, तुलसी हों, भूषण हों या मैथिलीशरण, दिनकर, माखन लाल चतुर्वेदी, ‘नवीन’ और ‘चकवस्त’ हों ।

युग की समस्याओं से जूझने की प्रेरणा प्रदान करने के साथ—साथ कविता से आशा हो जाती है कि वह हृदय का स्पर्श करे, मर्म को प्रभावित करे। मानव—मन झूम उठने के लिये वाध्य हो जाय। नहीं तो अपना कथ्य कहने के लिए काव्य का सहारा क्यों लिया जाय। गद्य में तो और भी जोरदार ढंग से कहा जा सकता है। काव्य और संगीत का घनिष्ठ सम्बन्ध है।

‘कविता संगीतमय विचार है’ (Poetry is a lyrical thought). इसे पाश्चात्य



विद्वान भी स्वीकार करते हैं। हमारे यहाँ तो इसकी परम्परा बहुत प्राचीन कविता से गेयता एकदम समाप्त करना उचित नहीं होगा ।

नये कवियों एवं साहित्यकारों से आशा की जाती है कि वे युग की बौद्धिक समझ का चित्रण करें, नई उपमाएँ, नई विधायें प्रस्तुत करें, नई अभिव्यक्ति दें। बुझौवल, बौद्धिक दुरुहता कहने का अनाकर्षक ढंग छोड़ दें। परम्परा और संस्कृति को भी थोड़ा स्थान देते हुए शाश्वत साहित्य का सृजन करें। तभी वे इतिहास को गौरव करेंगे। हम 'जोश' मलीहाबादी के शब्दों में नये कवियों से निवेदन करते हुए अपना कथन समाप्त करेंगे—

‘लैलाए सुखन के गेसुओं को सुलझाओ,  
जो मैं न कर सका, वह तुम करके दिखलाओ ।

(श्री कृष्ण इंटर कालेज आश्रम बरहज की पत्रिका अनंत ज्योति 1969 से साभार)







## Science Today And Tomorrow

Dr. Paramanand Upadhyaya

Man is trying to find out the way's and means to make the life happier, pleasant and comfortable since the beginning. He is also interested in revealing the secrets of the nature. Now, he has reached the stage, when he can claim to have obtained something in these directions. He started his journey from the invention of the firestone. Now, he has discovered sputnic, the wonder of wonders and has reached the atomic age. This atomic energy has revolutionised the modern civilisation and has thrown a new light. Day by day we are marching on the path of progress and getting something new. Modern Science is shaping our culture and civilisation. It is so closely related to us, that it is impossible to imagine a day without its gifts. Radio, wireless, teleplione, cinemas, airoplanes and so many other inventions have made the human life happier and easier. Our journey is not so difficult as it was before. Man has conquered the highest peaks, big oceans and the vast sky. The world has become smaller now. We are constantly trying to reach the other planets and reveal their secrets. Sooner or later our aim will be fullfilled, our dream will be realised. We are waiting for the day eagerly. Gagorin's space flight is a step ahead in this direction.

Immense progress in various branches of Science is going on. We are very successful in eradication of so many deadly diseases of past in the field of medicine and surgery Plague is not very common and fatal disease now. The battle against tuberculosis is half won. Malaria is disappearing rapidly. The fight against cancer continues. Many diseases are becoming things of History. Now, the modern Science is busy in finding the ways to immortality. If this ambition is fullfilled, the greatest law of nature will be challenged. It is a commonly acknowleged fact that modern medicions have prolonged the human life. Penicillin, Streptomycin, Aureomycin, Sulpher Groups and vitamins are the wonder drugs, which give prompt relief to those who require them. But Science of medicine is not perfect yet and so we have not been able to understand fully so many things in this regard. We are trying to increase our knowledge day by day. There is all round development in surgery also.





Plastic surgery has become a common thing now, and it is possible to operate upon heart and brain. Some improvement in the technique takes place daily. It is not far off when we shall be able to have full command over these vital organs.

Now, it is atomic age. This theory has created a revolution. On one hand it has given those deadly weapons which can destroy the entire humanity in no time, on the other hand it can serve very useful purposes for human welfare. It can be used to break the big rocks, which can be converted into fertile lands, Physic ians are making use of it in so many diseases which have been declared incurable in the past. In the field of agriculture it is expected to increase production to meet the needs of growing population. In short right use of atomic energy will bring a new change in our living, but if we failed, we have to face destruction-Science of tomorrow will be more prosperous and charming but it all depend upon our thinking and guid-ance. It we want to be benefitted and take the full advantage of its blessings, we have to create peaceful atmosphere, deprived of any kind of tension and conflict. We have to fight with poverty, ignorance, disease and other natural calamities with the help of our advanced knowledge in Science, but how can we get success, if we think in terms of war and cruelty. We have to develop deep sense of humanity and prepare our selves to welcome Science of to-morrow then it will be a blessing to us.

(“दीनों के प्राण बाबा राघवदास” के नाम से श्री कृष्ण इंटर कालेज आश्रम बरहज से निकलने वाली पत्रिका 1961 से साभार )